प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 53 * JUL 2012 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Jul 01.mp3	29				सच्चिदानंदघन भगवान का अग्नि की भाँति व्यापक-नि०नि० व मायाकृत प्रकट-स०सा० स्वरूप निरूपण, भग० राम अवतार कथा	**
2	Jul 02 .mp3	38				**कर्म विकर्म अकर्म** निरूपण, वेद विहित-**कर्म**, वेद विरूद्ध-**विकर्म**, कर्माभाव-**अकर्म** है, आत्मा अकर्म है, **अकर्म का स्वरूप निरूपण**	**
3	Jul 03 .mp3	37			१५	गीता १५/१५-१७: सभी जीवों के हृदय में जीवरूप से मैं ही विराजमान हूँ मुझसे ही स्मृति-विस्मृति है, वेदों का वेत्ता एवं वेद्य मैं ही हूँ, संसार में क्षण क्षण में नाश होने वाले देह **'क्षर'** व इनके कारणरूप प्रकृति **'अक्षर'** २ पुरुष हैं, नाशवान कार्य-कारण रूप जड़ माया जा०-स्व०-सु० से ऊपर ज्ञान स्वरूप अविनाशी **'उत्तम पुरुष'** हमारा आत्मा है जो जा०स्व०सु० का आधार-अधिष्ठान है	*** Jmp ***
4	Jul 04 .mp3	36				गीता १५/१५: हमारा स्वरूप स्वभाव से ही सच्चिदानंद अचल सनातन दृष्टा साक्षी है ये संसार असत-जड़-दुःखरूप माया मात्र है	**
5	Jul 05 .mp3	36				गीता १५/१५-१७: मायाकृत **दृश्य** जगत एवं मुझ **द्रष्टा** के सिवा अन्य कुछ नहीं है, **क्षर अक्षर** व **उत्तम पुरुष** – स्वरूप निरूपण	****
6	Jul 06 .mp3	34				गीता १५/१६-२०: मायाकृत देह **क्षर** व कूटस्थ माया **अक्षर** है, इनसे परे व द्रष्टा **उत्तमपुरुष** हमारा **आत्मा** है-यही संपूर्ण ज्ञान है	Jmp
7	Jul 07 .mp3	33				गीता १३/२-३: संसार में **क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ** २ ही पदार्थ हैं इन दोनों काज्ञान ही संपूर्ण ज्ञान है, सभी देह क्षेत्र व इनका द्रष्टा क्षेत्रज्ञ है	**
8	Jul 08 .mp3	36				गीता १३/२-३: **क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ** २ ही पदार्थ हैं, सभी शरीर क्षेत्र व उनमें बैठा द्रष्टा जीवात्मा क्षेत्रज्ञ मैं हूँ, **तीनों शरीर रचना निरूपण**	१
9	Jul 09 .mp3	34				गीता १३/२-३: **क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ** २ पदार्थ हैं, शरीर क्षेत्र व उनका द्रष्टा जीवात्मा क्षेत्रज्ञ है, **ईश्वर के भी इनों समष्टि शरीरों की रचना**	२
10	Jul 10 .mp3	45				**ओंकार** का स्वर व्यंजन विस्तार, पाणिनी सूत्र एवं व्याकरण, सब नामरूप ओंकार का ही स्वरूप हैं, कुंजड़ा और हीरे की कथा	
11	Jul 11 .mp3	30				**ओंकार** की अकार-उकार-मकार ३ मात्राओं का जा०स्व०सु०/स्थू०सू०का०शरीर/पाँचकोष/३ गुण/ब्र०विष्णु महेश रूप में विस्तार	Jmp
12	Jul 12 .mp3	47				आनंद रामायण-मनोहरकाण्ड: **'श्रीरामजयरामजयजयराम'** मंत्र की विवेचना एवं महात्म्य, **राम ब्रह्म/पुरुष** व **सीता माया/छाया हैं**	**
13	Jul 13 .mp3	33				ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या, **सृष्टिक्रम**, ईश्वर और जीव दोनों कल्पित, **ईश्वर** की **समष्टि** व **जीव** की **व्यष्टि,** दोनों की कल्पित सृष्टि	Jmp
14	Jul 14 .mp3	32				माया-ब्रह्म का स्वरूप निरूपण, सषु०-**'कारण'** एवं स्वप्न+जागृत-**'कार्य' मायादृश्य** अज्ञानरूप हैं, हम चौथे ज्ञानरूप **द्रष्टा ब्रह्म** हैं	Jmp
15	Jul 15 .mp3	27				भ०के **निनि०**एवं**ससा०** २ रूप शास्त्र में वर्णित हैं, निनि०-अव्यवहारी अद्वितीय नित्य विभु **'सत्'** तथा ससा० व्यवहारी 'असत्' है	**
16	Jul 16.mp3	33				**पाँच माताओं का वर्णन** - १जन्मदात्री, २जन्मभूमि, ३ज्हान्वी, ४सुरभी, ५वेदमाता, **४वृद्धतायें** - वर्णवृद्ध आयुवृद्ध बुद्धिवृद्ध ज्ञानवृद्ध	a
17	Jul 17 .mp3	44				**पाँच माताओं का वर्णन, दृष्टान्त** :- मन्दात्सा द्वारा पुत्र को, रानी चुड़ैला द्वारा पति को एवं जड़ भरत द्वारा पिता को ज्ञानोपदेश	b
18	Jul 18 .mp3	32				भ०राम ने मनुष्यों को 'शिक्षा' देने के लिये मनुष्य रूप में अवतार लिया, पंचवटी में सूर्पनखा एवं भ०राम की नर लीला का प्रसंग	
19	Jul 19 .mp3	31				**पाँच माताओं का वर्णन,** वेदमाता - मुख्य एवं श्रेष्ठ, 'मल विक्षेप आवरण' के निवारण हेतु त्रिकाण्डमय वेद -'कर्म उपासना ज्ञान'	c
20	Jul 20 .mp3	30				भगवान को पाने का साधन त्रि०वेद है, कर्म-उपासना-ज्ञान आध्यात्मिक त्रिवेणी है और संतलोग 'जंगम' चलते-फिरते प्रयागराज हैं	
21	Jul 21 .mp3	40				भ० के ज्ञान से ही कल्याण है, **प्रियता का क्रम** :: पुत्र-इन्द्रियाँ-प्राण-आत्मा, आत्मा सबसे प्यारा है-क्योंकि **'सच्चिदानंद'** स्वरूप है	
22	Jul 22 .mp3	30				वृन्दावन में युवा **भक्ति** का **ज्ञान-वैराग्य** पुत्रों की वृद्धता के लिये विषाद, नारद मुनि का श्रीमद्भागवत् की कथा द्वारा निवारण	
23	Jul 23 .mp3	39				**पाँच माताओं का वर्णन, वेदमाता** - 'कर्म उपासना ज्ञान' से 'मल विक्षेप आवरण' के नाश द्वारा भगवान के दर्शन होने लगते हैं	d
24	Jul 24 .mp3	30				कृष्ण-श्रीदामा बाल लीला के दृष्टान्त द्वारा **जीव-ईश्वर का अभेद दर्शन** एवं भगवान की अपेक्षा **भक्त की श्रेष्ठता** का निरूपण	
25	Jul 25 .mp3	41				सामवेद-छा०उ०-७तवाँ अ० :: नारद-सनत्कुमार सम्वाद, नारद द्वारा अपनी अनेक विद्याओं का वर्णन किन्तु आत्मा का अज्ञान हैं	१
26	Jul 26 .mp3	34			अ	**भगवान कृष्ण** का वृन्दावन में **भक्तियोग** एवं कंस चाणूर जरासंध कालयवन आदि असुरों के दमन द्वारा **कर्मयोग** प्रतिपादन	
27	Jul 27 .mp3	25				नारद-सनत्कुमार सम्वाद, **भूमा नाम महान अथवा ब्रह्म का है** । जो सबसे बड़ा हो वही महान या ब्रह्म है । जहाँ इन्द्रिय मन बुद्धि आदि की पहुँच नहीं है वह भूमा तत्त्व है । भूमा महान है और वही सुखरूप है । यह ज्ञान स्वरूप भूमा तत्त्व अजन्मा अमृतरूप है, वही ब्रह्म है, ब्रह्म ही आत्मा है व आत्मा ही ब्रह्म है । नारद **'तत्तवमसि'** - वही तुम्हारा भी स्वरूप है	२
28	Jul 28 .mp3	30			ब	**भक्तियोग** - सर्वत्याग कर मन वचन कर्म से मुझसे प्रेम करना ही मेरी भक्ति है, भक्तियोग से **क्रममुक्ति, ज्ञानयोग** से **सद्यमुक्ति**	
29	Jul 29 .mp3	37				सामवेद-छा०उ०-अ०६ :: **उद्दालक का श्वेतकेतु को उपदेश** :: एक 'ब्रह्म' के ज्ञान से सर्व का ज्ञान हो जाता है जैसे 'कारण' माटी के ज्ञान से सभी 'कार्य' यानि घट-मठ का ज्ञान हो जाता है। कारण सत्य होता है और कार्य झूठा एवं कारण से अभिन्न होता है। **ब्रह्म** का स्वरूप **सच्चिदानंद** है, हे श्वेतकेतु! - **ततवमसि,** तेरा भी वही स्वरूप है।	Jmp १
30	Jul 30 .mp3	33		भाग १		अ०रा०-प्रथम सर्ग-राम हृदय :: सीताजी द्वारा भगवान राम का **निनि० स्वरूप निरूपण** :- 'रामं विद्धि परम्ब्रह्म सच्चिदानंदअद्वयं'	
31	Jul 31 .mp3	47				सामवेद-छा०उ०-अ०६ :: **उद्दालक का श्वेतकेतु को उपदेश**:: एक माटी ही सत्य है घट-मठ कल्पित हैं, मिथ्या हैं, वैसे ही विद्वान लोग आदि-मध्य-अंत में जल ही देखते हैं तरंगें नहीं । सृष्टि के आदि में एक ब्रह्म ही था, देह इ०म०बु० सच्चिदानंद की तरंगरूप हैं अंत में एक सच्चिदनिंद ही शेष रह जायेगा, **'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या'** - **ततवमसि**	Jmp २
32	Jul 32 .mp3	31		भाग २		अ०रा०-प्रथम सर्ग-राम हृदय :: सीताजी द्वारा भगवान राम का **निनि० स्वरूप निरूपण**:-'रामं विद्धि परम्ब्रह्म सच्चिदानंदअद्वयं'	
33	Jul 33 .mp3	26				भगवान में माया से जगत उत्पन्न होता है उनमें रहता व उन्हीं में लीन हो जाता है, भगवान ही सत्य हैं, **सृष्टिक्रम - ब्रह्मोपनिषद**	क
34	Jul 34 .mp3	31		भाग ३		अ०रा०-प्रथमसर्ग-रामहृदय :: **सीताजी का निज स्वरूप निरूपण** -राम की प्रेरणा से मैं ही जगत की उत्पत्ति स्थिति प्रलय करती हूँ	
35	Jul 35 .mp3	36		विशेष		**ब्रह्मोपनिषद** में **सृष्टिक्रम,** २५ तत्त्व का **स्थूल** + १६ तत्त्व का **सूक्ष्म** + स्वरूप अज्ञान कृत **कारण** शरीर एवं **पंचकोष निरूपण**	ख
36	Jul 36 .mp3	31		भाग ४		भगवान राम का नि०न० स्वरूप **'सच्चिदानंद'** है वही परमात्मा हमारा अभेद आत्मा हैं + **सीताजी द्वारा निज स्वरूप निरूपण**	
37	Jul 37 .mp3	32				उपनिषदें वेद का सिरोभाग हैं जो जीव जगत माया व ब्रह्म के निनि०-ससा०का पूर्ण ज्ञान कराती हैं, **सृष्टिक्रम- तैत्रीय उपनिषद**	ग
38	Jul 38 .mp3	35		भाग ५		सीताजी द्वारा भ०**राम का निनि० एवं स्वयं का स्वरूप निरूपण**: + अद्भुत रामायण - **सहस्त्रमुख रावण वध व महाकाली की कथा**	
39	Jul 39 .mp3	31		विशेष		ब्रह्म एवं माया जीव ईश्वर जगत - स्वरूप निरूपण, **ईश्वर और जीव सृष्टि, "ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मैव न परा"**	घ
40	Jul 40 .mp3	32				अन्नपूर्णोपनिष्द -**पाँच भ्रान्तियाँ** :: **१ जीव-ईश्वर भेद भ्रान्ति**-दृ०बिम्ब प्रतिबिम्ब २ आत्मा कर्ता भोक्ता भ्रान्ति-दृ०स्फटिक लोहित ३ संग भ्रान्ति-दृ०घटाकाश-महाकाश ४ जगत परमात्मा का विकार-दृ०रज्जु सर्प ५ जगत परमात्मा से भिन्न व सत्य-दृ०स्वर्ण आभूषण	विशेष १
41	Jul 41 .mp3	29				भगवान राम का उपदेश -**मनुष्य शरीर महिमा** :: मनुष्य शरीर अति दुर्लभ है जिसका एक मात्र प्रयोजन भगवान को जानना है	
42	Jul 42 .mp3	35				**पाँच भ्रान्तियाँ** :: २ **आत्मा कर्ता भोक्ता भ्रान्ति**-दृ०स्फटिक लोहित **३ आत्मा का तीन शरीरों से संग भ्रान्ति**-दृ०घटाकाश महाकाश **४ जगत परमात्मा का विकारभ्रान्ति**-दृ०रज्जु सर्प **५ जगत, कारण रूप परमात्मा से भिन्न व सत्य**-दृ०स्वर्ण आभूषण	विशेष २
43	Jul 43 .mp3	28				सीताराम जगत के मातापिता हैं अतः सारा जगत सीताराम का ही स्वरूप है क्योंकि संतान अपने मातापिता का ही स्वरूप होती है	****

44	Jul 44 .mp3	36				**ब्रह्म** का **तटस्थ / उप लक्षण** - जिसमें जगत उत्पन्न होता रहता व लीन होता है वह ब्रह्म है, उपलक्षण गुण :: एक देशीय व्यावर्तक कदाचित **स्वरूप लक्षण** - सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म एवं **जीव** का **स्वरूप लक्षण** - 'ये ऐष हृदि अन्तर्ज्योतिः पुरुषः' - **तत्त्वमसि**	अति विशेष
45	Jul 45 .mp3	31				सीताराम जगत के मातापिता हैं, शरीरों की उत्पत्ति पालन संहार सीताजी करती हैं, जीवात्मा रामअंश होने से अजन्मा अविनाशी है	****
46	Jul 46 .mp3	30				**पाँच भ्रान्तियाँ** :: **१ जीव-ईश्वर भेद**-दृ०बिम्ब प्रतिबिम्ब २ **आत्मा कर्ता भोक्ता**-दृ०स्फटिक लोहित **३ आत्मा का तीन शरीरों से संग**-दृ०घटाकाश महाकाश **४जगत परमात्मा का विकार**-दृ०रज्जु सर्प **५जगत कारण परमात्मा से भिन्न व सत्य**-दृ०स्वर्ण आभूषण	विशेष ३
47	Jul 47 .mp3	30				भ०विष्णु की नाभि से उत्पन्न ब्रह्मा को १०० वर्ष तप के बाद चतुर्भुज रूप में भ० विष्णु द्वारा **ब्रह्मा को विज्ञान सहित तत्त्व ज्ञान का उपदेश**-**'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या', 'अस्ति भाति प्रिय'** रूप से अद्वितीय ब्रह्म ही सत्य है, तरंग की भांति जगत नामरूप मात्र है	**** **१*
48	Jul 48 .mp3	33				सरस्वती रहस्योपनिषद :: **'अस्ति भाति प्रिय नाम रूप'** जगत में ये पाँच ही अंश हैं, **'अस्ति भाति प्रिय' - ब्रह्म** अथवा हमारी **आत्मा** है तथा **'नाम रूप'** जड़ विकारी एवं नाशवान **जगत का स्वरूप** है, आत्मा या परमात्मा का स्वरूप **'सत्-चित्-आनंद'** है	Imp **
49	Jul 49 .mp3	30				भ०विष्णु ने सर्वप्रथम **ब्रह्मा को** उत्पन्न किया व उन्हें शोक-मोह से ग्रस्त देखकर **वेद का उपदेश** दिया कि सृष्टि के आदि में एक मैं ही था, मध्य में भी मैं ही हूँ व अंत में मैं ही शेष रह जाता हूँ जगत का **मैं अभिन्न निमित्तोपादान कारण भी हूँ और कार्य भी**	**** *१*
50	Jul 50 .mp3	31				**चिदाभास की ७ अवस्थाऐं** :: १अज्ञान २आवरण ३विक्षेप ४परोक्ष ज्ञान ५अपरोक्ष ज्ञान ६दुःख निवृत्ति ७अपार हर्ष - **अहंब्रह्मास्मि**	Imp
51	Jul 51 .mp3	29				लक्ष्मण का प्रभुराम से **माया ईश्वर जीव ज्ञान वैराग्य** एवं **भक्ति** के स्वरूप हेतु प्रश्न तथा उनके **निरूपण की प्रार्थना**	****
52	Jul 52 .mp3	34				**पैंग्लोपनिषद उ०/वाराह उ०/योगवाशिष्ठ :: ज्ञान की ७ अवस्थाऐं** :: १ शुभेच्छा २ विचारणा ३ तनुमानसी ४ सत्वापत्ति ५ असन शक्ति ६ पदार्थाभावनी ७ तुरीयगाह। **शुभेच्छा** भूमिका : विवेक वैराग्य मुमुक्षुता व षट्कसंपदा-शम दम तितीक्षा उपरति श्रद्धा समाधान	विशेष १
53	Jul 53 .mp3	36				**पैंग्लोपनिषद उ० :: ज्ञान की ७ अवस्थाऐं** :: **१ शुभेच्छा**-साधन चतुष्टय + षट्कसंपदा **२ विचारणा**-श्रोत्तीय ब्रह्मनिष्ठ गुरु की शरणागति एवं गुरु द्वारा ब्रह्म स्वरूप 'सच्चिदानंद' का उपदेश **३ तनुमानसी**-श्रवण मनन **४ सत्वापत्ति**-तुरीय का निधिध्यासन	विशेष २
54	Jul 54 .mp3	30				'मल विक्षेप आवरण' की निवृत्ति हेतु 'कर्म उपासना ज्ञान' त्रि० वेद है फिर भगवान के दर्शन प्रत्यक्ष होने लगते हैं, **कर्मयोग**	
55	Jul 55 .mp3	33				त्रि०वेद में कक्षा/सोपान क्रम,अंतिम ज्ञानकाण्ड वेदांत कहलाता है फिर परमधाम प्राप्ति :: **अध्यारोप-अपवाद प्रक्रिया से ब्रह्म नि०**	
56	Jul 56 .mp3	28				**चार कृपाऐं** :: **१ ईश्वरकृपा - मनुष्य देह प्राप्ति** २ गुरुकृपा ३. वेदकृपा ४ आत्मकृपा	
		00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA